PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

वर्णमाला

- "भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि है। (जबकि लिपि की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।)
- वर्णमाला = वर्ण + माला
- वर्णः- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते है जिसका खण्ड ना हो सके।

  जैसे -

  अ, इ, उ, क्, ख्, ग्
- ध्यान देः- हिन्दी व्याकरण के सभी स्वर वर्ण होते है।
- अक्षरः- दो ध्वनियों के मेल को अक्षर कहते है जिनका खण्ड किया जा सकता है।

  जैसे -

  क+अ = क अक्षर
- माला :- व्यवस्थित क्रम को माला कहते है।

वर्णमाला:- वर्णों के क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित उच्चारण समूह को वर्णमाला कहते है।

1- स्वर (11 वर्ण) 2- व्यंजन (33 वर्ण)

- नोटः- हिन्दी भाषा में वर्गों की संख्या (ध्वनि चिन्हों की संख्या) 52 है
- वर्णो के भेद - स्वर, व्यंजन और अयोगवाह

स्वर

1- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है।

2- जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अवरोध या बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से बोले जाते है उन्हें स्वर कहते है।

- नोटः- हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णो की संख्या 52 है इस वर्णमाला को देवनागरी वर्णमाला या नागरी वर्णमाला कहा जाता है।

स्वर के 2 प्रकार है -

हस्व स्वर	दीर्घ स्वर
(एकमात्रिक स्वर)	(द्विमात्रिक स्वर)
अ, इ, उ, ऋ	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

- मूल स्वरः- वे स्वर जिनको खण्डित नहीं किया जा सकता। इनकी संख्या 4 है। हस्व स्वर ही मूल स्वर है। अ, इ, उ, ऋ
- दीर्घ मूल स्वर- इसकी संख्या तीन है। आ, ई, ऊ
- परम्परागत स्वरः- हिन्दी व्याकरण के सभी स्वर को परम्परागत स्वर कहते है इनकी संख्या 11 होता है।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- संयुक्त स्वर:- हिन्दी व्याकरण में स्वर की संख्या चार है। क्योंकि ये दो स्वरो से मिलकर बनते है इसलिये इन्हे संयुक्त स्वर कहते है।

  ए - अ +इ (अ+ई, आ+इ, आ+ई)

  ऐ - अ+ ए (अ+ऐ, आ+ए, आ+ऐ)

  ओ - अ+उ (अ+ऊ, आ+उ, आ+ऊ)

  औ - अ + ओ (अ+औ, आ+ओ, आ+औ)

- केन्द्रीय स्वर:- हिन्दी व्याकरण में (अ) को केन्द्रीय स्वर कहते है।
- प्लुत स्वर:- वे स्वर जिनके उच्चारण में हस्व या दीर्घ दोनो से ज्यादा समय लगता है। प्लुत स्वर को त्रिमात्रिक स्वर भी कहते है इसके उच्चारण में तीन गुने का समय लगता है।
- नोट:- प्लुत स्वर का प्रयोग पुकारने के लिये किया जाता है। व्याकरण की दृष्टि से प्लुत स्वर का कोई चिन्ह नहीं होता है। इसका चिन्ह हिन्दी प्रयोग तीन होता है जैसे - ओउम् इसका प्रयोग हिन्दी भाषा मे नहीं किया जाता है यह मूलत: संस्कृत भाषा स्वर है।

ओठ की गोलाई के आधार (2)

1. वृत्ताकार - जिन स्वरो के उच्चारण में ओठ गोल हो जाये। जैसे:- उ, ऊ, ओ, औ, ऑ
2. आवृत्ताकार :- जिन स्वरो के उच्चारण में ओठ फैल जाये। जैसे:- अ,आ, इ, ई, ए, ऐ

मुख विवर के खुलने के आधार पर (4)

1. विवृत - मुख-विवर पूरा खुलता हो। जैसे - आ
2. अर्ध-विवृत - मुख-विवर आधा खुलता हो। जैसे - अ, ऐ, औ, ऑ
3. अर्ध-संवृत - मुख-विवर आधा बंद रहता है। जैसे - ए, ओ
4. संवृत - मुख-विवर लगभग बंद रहता हो। जैसे - इ, ई, उ, ऊ

हवा के आधार पर स्वर (2)

1. निरूनुनासिक (मौखिक स्वर) - जिन स्वरो के उच्चारण में हवा केवल मुंह से निकले हिन्दी व्याकरण के सभी स्वर निरूनासिक होते है। (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)
2. अनुनासिक:- जिन स्वरो के उच्चारण में हवा मुँह ओर नाक दोनो से निकले (मुँह + नाक) उन्हें अनुनासिक कहते है। (अँ, आँ, इँ आदि)

घोषत्व के (स्वतंत्र/कंपन) आधार पर स्वर

- हिन्दी व्याकरण में सभी स्वर स्वतंत्र होते है इनके उच्चारण में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता है।
- सभी ध्वनियाँ कंपन से उत्पन्न होती है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- नोट:- अतः सभी स्वर सघोष (घोष) कहलाते है।
- आगत स्वर - अ(आना) + गत(स्थान)
- वे स्वर जो भित्त स्त्रोत से आय हो उन्हे आगत स्वर कहते है।
- अनुस्वार – अं
- अनुनासिक - अँ
- विसर्ग - अ: (इसका उच्चारण ह की भाँति स्वतंत्र होता है।)
- नोट:- हिन्दी व्याकरण में अं और अः को स्वर और व्यंजन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

स्वरों क उच्चारण स्थान

स्वर	स्थान
अ, आ	कण्ठ
इ, ई	तालव्य
उ, ऊ	ओष्ठ्य
ऋ	मूर्धन्य
ए, ऐ	कण्ठ तालल्य
ओ, औ	कण्ठ, ओष्ठ

- नोट:- ऋ - का उच्चारण सामान्यत: र + इ = रि के व्यंजनात्मक रूप में किया जाता है

व्यंजन

- वह वर्ण जिनके उच्चारण में अन्य वर्ण की सहायता ली जाती है। उन्हे व्यंजन कहते है।
- हिन्दी भाषा में व्यंजनों के संख्या 41 बतायी जाती है।
- हिन्दी व्याकरण में व्यंजनो की संख्या 33 होती है।

व्यंजक के भेद (6)

1. स्पर्शी,
2. अन्तस्थ,
3. ऊष्मा,
4. आगत,
5. संयुक्त
6. द्विगुण/ उत्क्षिप्त

1- स्पर्शी व्यंजन:- क वर्ग से प वर्ग के अन्तिम वर्ण म तक (इनकी कुल संख्या 25 होती है)

2- अन्तस्थ व्यंजनः- इनकी संख्या 4 है। य, र, ल, व

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

अन्तःस्थ व्यंजन तीन प्रकार के होते है।

(i) अर्द्धस्वर - य, व

(ii) लुठित/प्राकमपित - र

(iii) पार्शिक - ल

- नोट:- इ + अ = य, उ + ऊ = व इसलिये इन्हे अर्द्धस्वर कहते है।

3- ऊष्म व्यंजन:- उष्म व्यंजन की संख्या 4 होती है। (श ष स ह)

श - तालव्य	ष - मूर्धा
स - दन्त्य	ह - स्वतंत्रीय (कंठ)

4- आगत व्यंजन:- आगत शब्द का अर्थ है भिन्न स्त्रोत से आया हुआ। क़, ख़, ग़, ज़, फ़

नोट:- ये अरबी भाषा से लिये गये है।

5. संयुक्त व्यंजन:- वे वर्ण जो दो वर्णो से मिलकर बनते है उन्हे संयुक्त व्यंजन कहते है। इनकी संख्या हिन्दी व्याकरण में 4 है।

क्ष = क् + ष	श्र = श् + र
त्र = त् + र	द्य = द् + य (विशेष)
ज्ञ = ज् + ञ	

6. उत्क्षिप्त व्यंजन:- (ढ़ ड़) वे व्यंजन जो स्वतः उत्पन्न हुये हो

वे व्यंजन जो झटके से मुख से बाहर आते है। हिन्दी व्याकरण में इनकी संख्या 2 है।

- नोट:- द्वित्व व्यंजन:- वे व्यंजन जो डेढ़ के रूप में प्रयोग किये जाते है उन्हें द्वित्व व्यंजन कहते है।

  जैसे - दिल्ली

- नोट:- हिन्दी व्याकरण में आगत व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन, तथा संयुक्त व्यंजन को व्यंजन की श्रेणी में नहीं रखा जाता इसलिये इनकी संख्या 33 बतायी गई है।

कंपन या घर्षण के आधार पर व्यंजन 2 प्रकार के है

1. अघोष
2. सघोष

अघोष:- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में कम कम्पन्न उत्पन्न हो अधोष कहलाता है। दूसरे खम्भे के सभी वर्ण तथा श ,ष स

सघोष:- वे वर्ण जिनके उच्चारण में अधिक कंपन उत्पन्न हो वे संघोष कहलाते है। इसमे तीसरा, चौथा, पाँचवा खम्भा सभी अस्तस्थ व्यंजन और ह को संघोष में रखा जाता

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

- नोट:- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में हवा केवल नाक से निकले उन्हे अनुनासिक व्यंजनकहते है।
- पाँचवे खम्भे की सभी व्यंजन अनुनासिक या पचमाक्षर (ड. ञ, ण, न, म) होते है।

वायु के आधार पर व्यंजन 2 प्रकार है-

1- अल्पप्राण:- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में कम हवा निकले अल्पप्राण कहलाते है।
इसमे पहला, तीसरा, पाँचवा स्तम्भ के सभी वर्ण तथा अन्तःस्थ व्यंजन आते है।

2- महाप्राण:- वे जिनके उच्चारण में अधिक मात्रा में हवा निकले। इसमें दूसरा तथा चौथा स्तम्भ के सभी वर्ण और श, स, ष, ह आते है

स्थान के आधार पर व्यंजन

व्यंजन	उच्चारण स्थान
क वर्ग	कण्ठ (अ, आ)
च वर्ग	तालव्य (य, श)
ट वर्ग	मूर्धन
त वर्ग	तर्ग दन्त्य
व फ	दंतोष्ठ
प वर्ग	ओष्ठ

- नोट:- अमानक वर्ण वे वर्ण होते है जो रचना की दृष्टि से सही ना हो।

'र' का प्रयोग -

- स्वतंत्र रूप से 'र' का प्रयोग

जैसे -

आराम, विराम, ज़रा

- जब कोई वर्ण 'र' के साथ संयुक्त होता है इसे तीन प्रकार से देखते है।

जैसे -

(1) 'र' से पहले यदि कोई हलन्त व्यंजन हो तो

जैसे -

प् + र = प्र (प्रिया, प्रथम, क्रिया, प्रकाश)

(2) हलन्त (आधा) 'र' अपने बाद आने वाले वर्ण के ऊपर लग जाता है, इसे 'रेफ' भी कहते है।

जैसे -

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

र् + प = र्प (कर्म, चर्म, सूर्य, वर्ण)

(3) 'ट' वर्ग के वर्णों के साथ यह नीचे जुड़ जाता है।

जैसे -

ट् + र = ट्र (ट्रक, ट्रामा, ड्रम, ड्रामा, राष्ट्र)

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090